सिक्का बदल गया

कृष्णा सोबती

खद्दर की चादर ओढ़े, हाथ में माला लिये शाहनी जब दरिया के किनारे पहुँची तो पौ फट रही थी। दूर-दूर आसमान के परदे पर लालिमा फैलती जा रही थी। शाहनी ने कपड़े उतारकर एक और रखे और, "श्री....राम, श्री....राम' करती पानी में हो ली। अंजलि भरकर सूर्य देवता को नमस्कार किया, अपनी उनींदी आँखों पर छींटे दिए और पानी से लिपट गई!

चनाब का पानी आज भी पहले-सा सर्द था, लहरें लहरों को चूम रही थीं। वह दूर-सामने कश्मीर की पहाड़ियों से बर्फ पिघल रही थी। उछल-उछल आते के भँवरों से टकराकर कगारे गिर रहे थे, लेकिन दूर-दूर तक बिछी रेते आज न जाने क्यों खामोश लगती थी! शाहनी ने कपड़े पहने, इधर-उधर देखा, कहीं किसी की परछाई तक न थी। पर नीचे रेत में अगणित पाँवों के निशान थे। वह कुछ सहम सी उठी!

आज इस प्रभात भी मीठी नीरवता में न जानें क्यों कुछ भयावना सा लग रहा है। वह पिछले पचास वर्षों से यहाँ नहाती आ रही है। कितना लम्बा अरसा है! शाहनी सोचती है, एक दिन इस दरिया के किनारे वह दुलहिन बनकर उतरी थी। और आज....शाहजी नहीं, उसका वह पढ़ा-लिखा लड़का नहीं, आज वह अकेली है, शाहजी की लम्बी-चौड़ी हवेली में अकेली है। पर नहीं-यह क्या सोच रही है वह सवेरे-सवेरे! अभी भी दुनियादारी से मन नहीं फिरा उसका! शाहनी ने लम्बी साँस ली और 'श्रीराम, श्रीराम' करती बाजरे के खेतों से होती घर की राह ली। कहीं-कहीं लिपे-पुते आँगनों पर से धुआँ उठ रहा था। टन-टन बैलों की घंटियाँ बज उठती हैं। फिर भी....फिर भी कुछ बँधा-बँधा-सा लग रहा है। 'जम्मीवाला' कुआँ भी आज नहीं चल रहा। ये शाहनी की ही असामियां हैं। शाहनी ने नजर उठाई। यह मीलों फैले खेत अपने ही हैं। भरी-भराई नई फसल को देखकर शाहनी किसी अपनत्व के मोह में भीग गई। यह सब शाहनी की बरकतें हैं। दूर-दूर गाँवों तक फैली हुई जमीनें, जमीनों में कुएँ-सब अपने हैं। साल में तीन फसल, जमीन तो सोना उगलती है। शाहनी कुएँ की ओर बढ़ी,

Scanned by CamScanner

आवाज दी, "शेरे, शेरे-हुसैना, हुसैना...।"

शेरा शाहनी का स्वर पहचानता है। वह ना पहचानेगा! अपनी माँ जैना के मरने के बाद वह शाहनी के पास ही पलकर बड़ा हुआ। उसने पास पड़ा गँड़ासा 'शटाले' के ढेर के नीचे सरका दिया। हाथ में हुक्का पकड़कर बोला, "ऐ हुसैना, हुसैना....।" शाहनी की आवाज उसे कैसे हिला गई है! अभी तो वह सोच रहा था कि उस शाहनी की ऊँची हवेली की अँधेरी कोठरी में पड़ी सोने-चाँदी की सन्दूकचियाँ उठाकर-कि तभी 'शेरे....'। शेरा गुस्से से भर उठा। किस पर निकाले अपना क्रोध? शाहनी पर! चीखकर बोला, 'ऐ मर गई क्या!.... रब्ब तुम्हें मौत दे...."

हुसैना आटेवाली कनाली को एक ओर रख, जल्दी-जल्दी बाहर निकल आई, "आती हूँ, आती हूँ-क्यों छा बेले तड़पता एँ?"

अब तक शाहनी नजदीक पहुँच चुकी थी। शेरे की तेजी सुन चुकी थी। प्यार से बोली, "हुसैना, यह वक्त लड़ने का है? वह पागल है तो तू ही जिगरा कर लिया कर!"

"जिगरा!" हुसैना ने मान-भरे स्वर में कहा, 'शाहनी, लड़का आखिर लड़का ही है। कभी शेरे से भी पूछा है कि मुँह-अँधेरे ही क्यों गालियाँ बरसाई हैं इसने?"

शाहनी ने लाड़ से हुसैना की पीठ पर हाथ फेरा, हँसकर बोली, "पगली, मुझे तो लड़के से बहू प्यारी है! शेरे...."

"हाँ शाहनी!"

"मालूम होता है, रात को कुल्लूवाल के लोग आए हैं यहाँ?" शाहनी ने गम्भीर स्वर में कहा।

शेरे ने जरा रुककर, घबराकर कहा, "नहीं-शाहनी..." शेरे के उत्तर की अनसुनी कर शाहनी जरा चिन्तित स्वर से बोली, "जो कुछ भी हो रहा है, अच्छा नहीं। शेरे, आज शाहजी होते तो शायद कुछ बीच-बचाव करते। पर...." शाहनी कहते-कहते रुक गई। आज क्या हो रहा है! शाहनी को लगा जैसे जी भर-भर आ रहा है। शाहजी को बिछुड़े कई साल बीत गए, पर-पर आज कुछ पिघल रहा है-शायद पिछली स्मृतियाँ....आँसुओं को रोकने के प्रयत्न में उसने हुसैना की ओर देखा और हल्के से हँस पड़ी। और शेरा सोच ही रहा है, क्या कह रही है शाहनी आज! आज शाहजी क्या, कोई भी कुछ नहीं कर सकता। यह होके रहेगा-क्यों न हो? हमारे ही भाई-बन्दों से सूद ले-लेकर शाहजी सोने की बोरियाँ तोला करते थे। प्रतिहिंसा की आग शेरे की आँखों में उतर आई।

Scanned by CamScanner

गँड़ोस की याद आ गई। शाहनी की ओर देखा–नहीं-नहीं, शेरा इन पिछले दिनों में तीस-चालीस कत्ल कर चुका था। पर.....पर वह ऐसा नीच नहीं.....सामने बैठी शाहनी नहीं, शाहनी के हाथ उसकी आँखों में तैर गए। वह सर्दियों की रातें–कभी-कभी शाहजी की डाँट खाके वह हवेली में पड़ा रहता था। और फिर लालटेन की रोशनी में देखता था, शाहनी के ममता-भरे हाथ दूध का कटोरा थामे हुए, 'शेरे, शेरे, उठ, पी ले।' शेरे ने शाहनी के झुर्रियाँ पड़े मुँह की ओर देखा तो शाहनी धीरे-से मुस्कुरा रही थी। शेरा विचलित हो गया–'आखिर शाहनी ने क्या बिगाड़ा है हमारा? शाहजी की बात शाहजी के साथ गई, वह शाहनी को जरूर बचाएगा। लेकिन कल रात वाला मशवरा! वह कैसे मान गया था फिरोज की बात? सब कुछ ठीक हो जाएगा.... सामान बाँट लिया जाएगा!'

"शाहनी चलो, तुम्हें घर तक छोड़ आऊँ।"

शाहनी उठ खड़ी हुई। किसी गहरे सोच में चलती हुई शाहनी के पीछे-पीछे मजबूत कदम उठाता शेरा चल रहा है। शंकित-सा इधर-उधर देखता जा रहा है। अपने साथियों की बातें उसके कानों में गूँज रही हैं। पर क्या होगा शाहनी को मारकर?

"शाहनी।"

"हाँ शेरे।"

शेरा चाहता है कि सिर पर आने वाले खतरे की बात कुछ तो शाहनी को बता दे, मगर वह कैसे कहे?

"शाहनी..."

शाहनी ने सिर ऊँची किया। आसमान धुएँ से भर गया था: "शेरे...." शेरा जानता है, यह आग है। जलालपुर में आज आग लगनी थी, लग गई! शाहनी कुछ न कह सकी। उसके नाते-रिश्ते सब वहीं हैं।

हवेली आ गई। शाहनी ने शून्य मन से ड्योढ़ी में कदम रखा। शेरा कब लौट गया, उसको कुछ पता नहीं। दुर्बल सी देह और अकेली, बिना किसी सहारे के! न जाने कब तक वहीं पड़ी रही शाहनी। दुपकर आई और चली गई। हवेली खुली पड़ी है। आज शाहनी नहीं उठ पा रही। जैसे उसका अधिकार आज स्वयं ही उससे छूट रहा है! शाहजी के घर की मालकिन.....लेकिन, नहीं, आज मोह नहीं हो रहा। मानो पत्थर हो गई हो। पड़े-पड़े साँझ हो गई, पर उठने की बात फिर भी नहीं सोच पा रही। अचानक रसूली की आवाज सुनकर चौंक उठी।

"शाहनी, शाहनी, सुना ट्रकें आती हैं लेने?"

"ट्रकें....? शाहनी इसके सिवाय और कुछ न कह सकी। हाथों ने एक-दूसरे

Scanned by CamScanner

को थाम लिया। बात-की-बात में खबर गाँव-भर में फैल गइ। लाह बीबी ने अपने विकृत कंठ में कहा, "शाहनी, आज तक कभी ऐसा न हुआ, न कभी सुना। गजब हो गया, अन्धेर पड़ गया।"

शाहनी मूर्तिवत् वहीं खड़ी रही। नवाब बीबी ने स्नेह-सनी उदासी से कहा, "शाहनी, हमने तो कभी न सोचा था।"

शाहनी क्या कहे कि उसी ने ऐसा सोचा था! नीचे से पटवारी बेगू और जैलदार की बातचीत सुनाई दी। शाहनी समझी कि वक्त आन पहुँचा। मशीन की तरह नीचे उतरी, पर ड्योढ़ी न लाँघ सकी। किसी गहरी, बहुत गहरी आवाज से पूछा, "कौन? कौन-कौन हैं वहाँ?"

कौन नहीं है आज वहाँ? सारा गाँव है, जो उसके इशारे पर नाचता था कभी। उसकी असामियाँ हैं, जिन्हें उसने अपने नाते-रिश्तों से कभी कम नहीं समझा। लेकिन नहीं, आज उसका कोई नहीं, आज वह अकेली है! यह भोड़-की-भीड़, उमनें कुल्लूवाल के जाट। वह क्या सुबह ही न समझ गई थी!

बेगू पटवारी और मसीत के मुल्ला इस्माइल ने जाने क्या सोचा। शाहनी के निकट आ खड़े हुए। बेगू आज शाहनी की ओर देख नहीं पा रहा। धीरे से जरा गला साफ करते हुए कहा, "शाहनी, रब्ब को यही मंजूर था।"

शाहनी के कदम डोल गए। चक्कर आया और दीवार के साथ लग गई। इसी दिन के लिए छोड़ गए थे शाहजी उसे? बेजान सी शाहनी की ओर देखकर बेगू सोच रहा है—क्या गुजर रही है शाहनी पर! मगर क्या हो सकता है! सिक्का बदल गया है....

शाहनी का घर से निकलना छोटी सी बात नहीं। गाँव-का-गाँव खड़ा है हवेली के दरवाजे से लेकर उस दारे तक जिसे शाहजी ने अपने पुत्र की शादी में बनवा दिया था। गाँव के सब फैसले, सब मशविरे यहीं होते रहे हैं। इस बड़ी हवेली को लूट लेने की बात भी यहीं सोची गई थी। यह नहीं कि शाहनी कुछ न जानती हो। वह जानकर भी अनजान बनी रही। उसने कभी बैर नहीं जाना। किसी का बुरा नहीं किया। लेकिन बूढ़ी शाहनी यह नहीं जानती कि सिक्का बदल गया है....

देर हो रही थी। थानेदार दाऊद खाँ जरा अकड़कर आगे गाया और ड्योढ़ी पर खड़ी जड़ निर्जीव छाया को देखकर ठिठक गया! वही शाहनी है, जिसके शाहजी उसके लिए दरिया के किनारे खेमे लगवा दिया करते थे। यह तो वही शाहनी है, जिसने उसकी मँगेतर को सोने के कनफूल दिए थे मुँह दिखाई में। अभी उसी दिन जब वह 'लीग' के सिलसिले में आया था तो उसने उद्दंडता से

Scanned by CamScanner

कहा था, 'शाहनी, भागोवाल मसीत बनेगी, तीन सौ रुपया देना पड़ेगा।' शाहनी ने अपने उसी सरल स्वभाव से तीन सौ रुपए आगे रखे दिए थे और आज....?

"शाहनी!" दाऊद खाँ ने आवाज दी। वह थानेदार है, नहीं तो उसका स्वर शायद आँखों में उतर जाता।

शाहनी गुम-सुम, कुछ न बोल पाई।

"शाहनी!" ड्योढ़ी के निकट जाकर वह बोला, "देर हो रही है शाहनी! (धीरे से) कुछ साथ रखना हो तो रख लो। कुछ साथ बाँध लिया है? सोना-चाँदी..."

शाहनी अस्फुट स्वर से बोली, "सोना-चाँदी!" जरा ठहरकर सादगी से कहा, "सोना-चाँदी! बच्चा, वह सब तुम लोगों के लिए है। मेरा सोना तो एक-एक जमीन में बिछा है।"

दाऊद खाँ लज्जित-सा हो गया, "शाहनी, तुम अकेली हो, अपने पास कुछ होना जरूरी है। कुछ नकदी ही रख लो। वक्त का कुछ पता नहीं...."

"वक्त?" शाहनी अपनी गीली आँखों से हँस पड़ी, "दाऊद खाँ, इससे अच्छा वक्त देखने के लिए क्या मैं जिन्दा रहूँगी!" किसी गहरी वेदना और तिरस्कार से कह दिया शाहनी ने।

दाऊद खाँ निरूत्तर है। साहस कर बोला, "शाहनी....कुछ नकदी जरूरी है।"

"नहीं बच्चा, मुझे इस घर से"—शाहनी का गला रुँध गया, "नकदी प्यारी नहीं। यहाँ की नकदी यहीं रहेगी।"

शेरा आन खड़ा हुआ पास। दूर खड़े-खड़े उसने दाऊद खाँ को शाहनी के पास देखा तो शक गुजरा कि हो-न हो कुछ मार रहा है शाहनी से। "खाँ साहिब, देर हो रही है...."

शाहनी चौक पड़ी। देर-मेरे घर में मुझे देर! आँसुओं की भँवर में न जाने कहाँ से विद्रोह उमड़ पड़ा। मैं पुरखों के इस बड़े घर की रानी और यह मेरे ही अन्न पर पले हुए....नहीं, यह सब कुछ नहीं। ठीक है—देर हो रही है। देर हो रही है। शाहनी के कानों में जैसे यही गूँज रहा है—देर हो रही है—पर नहीं, शाहनी रो-रोकर नहीं, शान से निकलेगी इस पुरखों के घर से, मान ले लाँघेगी यह देहरी, जिस पर एक दिन वह रानी बनकर आ खड़ी हुई थी। अपने लड़खड़ाते कदमों को सँभालकर शाहनी ने दुपट्टे से आँखें पोंछी और ड्योढ़ी से बाहर हो गई। बड़ी-बूढ़ियाँ रो पड़ी। उनके दुख-सुख की साथिन आज इस घर से निकल पड़ी है। किसकी तुलना हो सकती इसके साथ! खुदा ने सब कुछ दिया था, मगर-मगर दिन बदले, वक्त बदले....

Scanned by CamScanner

शाहनी ने दुपट्टे से सिर ढाँपकर अपनी धुँधली आँखों में से हवेली को अन्तिम बार देखा। शाहजी के मरने के बाद भी जिस कुल की अमानत को उसने सहेजकर रखा, आज वह उसे धोखा दे गई। शाहनी ने दोनों हाथ जोड़ लिये—यही अन्तिम दर्शन था, यही अन्तिम प्रणाम था। शाहनी की आँखें फिर कभी इस ऊँची हवेली को न देख पाएँगी। प्यार ने जोर मारा-सोचा, एक बार घूम-फिरकर पूरा घर क्यों न देख आई मैं? जी छोटा जो रहा है, पर जिनके सामने हमेशा बड़ी बनी रही है उनके सामने वह छोटी न होगी। इतना ही ठीक है। सब हो चुका है। सिर झुकाया। ड्योढ़ी के आगे कुलवधू की आँखों से निकलकर कुछ बूँदें चू पड़ीं। शाहनी चल दी—ऊँचा-सा भवन पीछे खड़ा रह गया। दाऊद खाँ, शेरा, पटवारी, जैलदार और छोटे-बड़े, बच्चे-बूढ़े, मर्द-औरतें सब पीछे-पीछे।

ट्रकें अब तक भर चुकी थीं। शाहनी अपने को खींच रही थी। गाँववालों के गलों में जैसे धुआँ उठ रहा है। शेरे, खूनी शेरे का दिल टूट रहा है। दाऊद खाँ ने आगे बढ़कर ट्रक का दरवाजा खोला। शाहनी बढ़ी। इस्माइल ने आगे बढ़कर भारी आवाज से कहा, "शाहनी, कुछ कह जाओ। तुम्हारे मुँह से निकली आसीस झूठी नहीं हो सकती!" और अपने साफे से आँखों का पानी पोंछ लिया। शाहनी ने उठती हुई हिचकी को रोककर रुँधे-रुँधे गले से कहा, "रब्ब तुम्हें सलामत रखे बच्चा, खुशियाँ बख्शे....।"

वह छोटा सा जनसमूह रो दिया। जरा भी दिल में मेल नहीं शाहनी के। और हम-हम शाहनी को नहीं रख सके। शेरे ने बढ़कर शाहनी के पाँव छुए—"शाहनी, कोई कुछ नहीं कर सका, राज ही पलट गया...." शाहनी ने काँपता हुआ हाथ शेरे के सिर पर रखा और रूक-रूककर कहा, "तुम्हें भाग लगे चन्ना।" दाऊद खाँ ने हाथ का संकेत किया। कुछ बड़ी-बूढ़ियाँ शाहनी के गले लगीं और ट्रक चल पड़ी।

अन्न-जल उठ गया। वह हवेली, नई बैठक, ऊँचा चौबारा, बड़ा 'पसार', एक-एक करके घूम रहे हैं शाहनी की आँखों में! कुछ पता नहीं, ट्रक चल रहा है यह वह स्वयं चल रही है। आँखों बरस रही हैं। दाऊद खाँ विचलित होकर देख रहा है, इस बूढ़ी शाहनी को। कहाँ जाएगी अब यह?

"शाहनी, मन में मैल न लाना। कुछ कर सकते तो उठा न रखते। वक्त ही ऐसा है। राज पलट गया है, सिक्का बदल गया है..."

रात को शाहनी जब कैम्प में पहुँचकर जमीन पर पड़ी तो लेटे-लेटे आहत मन से सोचा—'राज पलट गया है....सिक्का क्या बदलेगा? वह तो मैं वहीं छोड़ आई।....

Scanned by CamScanner

और शाहजी की शाहनी की आँखें और भी गीली हो गई।
आस पास के हरे-हरे खेतों से घिरे गाँवों में रात खून बरसा रही थी।
शायद राज पलटा खा रहा था और—सिक्का बदल रहा था....

Scanned by CamScanner

महत्त्वपूर्ण प्रश्न

सिक्का बदल गया

1. कहानी के तत्वों के आधार पर 'सिक्का बल गया' की समीक्षा कीजिए।
2. 'सिक्का बदल गया' के आधार पर कृष्णा सोबती की कहानी कला पर प्रकाश डालिए।
3. 'सिक्का बदल गया' में निहित मूल समस्या को चिन्हित कीजिए।
4. 'सिक्का बदल गया' देश विभाजन की एक मार्मिक व्यथा है। विश्लेषित करें।
5. शाहनी कौन है? उसकी चरित्रगत विशेषताओं पर प्रकाश डालें।
6. "आस पास के हरे-हरे खेतों से घिरे गाँवों में रात खून बरसा रही थी।" से क्या तात्पर्य है? स्पष्ट करें।
7. 'सिक्का बदल गया' के माध्यम से देश विभाजन की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालें।

Scanned by CamScanner